SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

सुरेन्द्र पाल सिंह, (Ph.D.), शिक्षा विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश, भारत
संजीव कुमार, (Ph.D.), बी0एड0 विभाग
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
सुरेन्द्र पाल सिंह, (Ph.D.), शिक्षा विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश, भारत
संजीव कुमार, (Ph.D.), बी0एड0 विभाग
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उत्तरप्रदेश, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 28/12/2020
Plagiarism : 02% on 21/12/2020

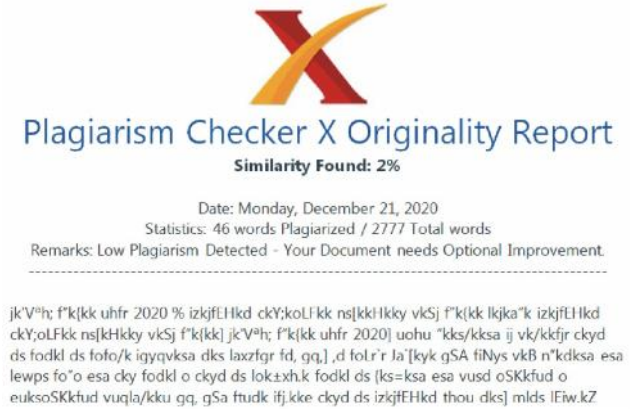
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, December 21, 2020
Statistics: 46 words Plagiarized / 2777 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

jk'V^h; f"k{kk uhfr 2020 % izkjfEHkd ckY;koLFkk ns[kkHkky vkSj f"k{kk lkjka"k izkjfEHkd ckY;oLFkk ns[kHkky vkSj f"k{kk] jk'V^h; f"k{kk uhfr 2020] uohu "kks/kksa ij vk/kkfjr ckyd ds fodkl ds fofo/k igyqvksa dks laxfgr fd, gq,] ,d foLr`r Ja'[kyk gSA fiNys vkB n"kdksa esa lewps fo"o esa cky fodkl o ckyd ds lok±xh.k fodkl ds {ks=ksa esa vusd oSKkfud o euksoSKkfud vuqla/kku gq, gSa ftudk ifj.kke ckyd ds izkjfEHkd thou dks] mlds lEiw.kZ

शोध सार

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नवीन शोधों पर आधारित बालक के विकास के विविध पहलुओं को संग्रहित किए हुए, एक विस्तृत श्रृंखला है। पिछले आठ दशकों में समूचे विश्व में बाल विकास व बालक के सर्वांगीण विकास के क्षेत्रों में अनेक वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक अनुसंधान हुए हैं जिनका परिणाम बालक के प्रारम्भिक जीवन को, उसके सम्पूर्ण जीवन की आधारशिला के रूप में व्याख्यायित करता है तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था को जीवन का निर्णायक चरण बताता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था ही ऐसी अवस्था है जिसमें बालक का शारीरिक–मानसिक, बौद्धिक, व्यवहारिक, व्यक्तित्व विकास तेजी से होता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा प्रेषित प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा (अर्ली चाइल्डहुड केयर एण्ड एजूकेशन) (ईसीसीई) शिक्षा की आधारशिला ही नहीं अपितु सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण भी है। इसलिए प्रारम्भिक शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विशेषतः ईसीसीई को अत्यधिक महत्व दिया है। ईसीसीई की संकल्पना एक ऐसे समेकित, समग्र, उच्चस्तरीय कार्यक्रम के रूप में की गई है जो बालक से जुड़े समस्त पहलुओं – शिक्षा, देखभाल, स्वास्थ्य, पोषण आदि सभी को विकसित करेगा। ईसीसीई मुख्यतः शिक्षा की गुणवत्ता, प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्रों, पाठ्यक्रम, शिक्षक चयन, शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षा केन्द्रों की विशेष सुविधा, नवीन सुसभ्य शिक्षा केन्द्रों की स्थापना से लेकर आदिवासी बहुल क्षेत्रों में आश्रमशालाओं का विकास तथा पूर्व प्राथमिक विद्यालय, नवीन शिक्षा केन्द्रों, प्री–प्राइमरी स्कूलों आदि को एकीकृत कर शिक्षा को एक नवीन स्वरूप प्रदान करना है। वास्तव में किसी राष्ट्र की आधारशिला उसका शिक्षा तंत्र ही होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारम्भिक बाल्यावस्था और

देखभाल के माध्यम से शिक्षा की आधारशिला को सुदृढ़ कर राष्ट्र को नवीन स्वरूप प्रदान करना है।

मुख्य शब्द

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सतत् विकास।

प्रस्तावना

21वीं सदी के भारत राष्ट्र की समस्त आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु, भारतीय शिक्षा प्रणाली को नवीन स्वरूप प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रादुर्भाव हुआ है। सर्वप्रथम भारत में शिक्षा नीति 1968 में प्रस्तावित की गई थी जिसका उद्देश्य भारत को बुद्धिमान, ज्ञानवान, चरित्रवान, सुयोग्य नवयुवक प्रदान करना था जिससे भारत सशक्त व समृद्ध बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पूर्व अंतिम राष्ट्रीय शिक्षा नीति सन् 1986 में बनायी गयी थी जिसकी समीक्षा हेतु एक समीक्षा समिति सन् 1990 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में बनाई गई तथा संशोधन हेतु एक समिति 1993 में प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में बनाई गई थी। वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए लगभग तीन दशक पश्चात वर्तमान सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलावों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को स्वीकार्यता प्रदान की है। के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में निर्मित राष्ट्रीय शिक्षा नीति विविध शोधों एवं विविध विद्वानजनों के अनुभवों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य सतत् विकास हेतु 2030 से पूर्व शिक्षा को सार्वभौतिक स्वरूप प्रदान करना है तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता, वहनीयता, जबावदेही जैसे आधारभूत स्तम्भों को मजबूती प्रदान कर प्रारम्भिक शिक्षा को उच्चस्तरीय बनाना है, जिससे प्रत्येक बालक राष्ट्रपयोगी सुयोग्य नागरिक के रूप में परिणमित हो सके। यदि शिक्षा की आधारशिला मजबूत न हो तो राष्ट्र कभी विकास की ओर अग्रसारित नहीं हो सकता। ऐसा माना जाता है, ''एक गलत शिक्षित बच्चा एक गँवा दिया गया बच्चा है।'' अतः प्रारम्भिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रादुर्भाव तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य करने का प्रस्ताव भारत जैसे विस्तृत राष्ट्र के लिए 'मील का पत्थर' है जो भारत देश को नवीन स्वरूप प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के महत्वपूर्ण बिन्दु

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' द्वारा शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य प्रारम्भिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना है। वास्तव में शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व शक्तिशाली माध्यम है जो भारत को विकासशील देशों की श्रेणी से एक विकसित देश की पृष्ठभूमि प्रदान कर सकती है। भारत में अनेक बालक–बालिकाएँ जो सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की श्रेणी में आते हैं। ईसीसीई का मुख्य उद्देश्य उन सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में लाना है तथा 2030 से पूर्व शिक्षा को सार्वभौमिकता प्रदान करना है जिससे भारत में कोई बालक प्राथमिक शिक्षा से वंचित न रहे। ईसीसीई भारत में गुणवत्ता पूर्ण व उच्चस्तरीय शिक्षा प्रारम्भिक अथवा प्राथमिक शिक्षा के समस्त बच्चों को प्रदान करने हेतु निश्चयबद्ध है जिससे भारत उत्तरोत्तर विकास के नये कीर्तिमान स्थापित कर सके।

''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप विश्व को बदलने के लिए कर सकते हैं।''

– नेल्सन मंडेला

''शिक्षा वह नींव है जिस पर हम अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।''

– क्रिस्टीनग्रेगाइर

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा शिक्षा को लचीला एवं बहुआयामी बनाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को विस्तृत स्वरूप प्रदान करना है। शिक्षा को लचीला, बहुआयामी व बहुस्तरीय बनाना है। ईसीसीई शिक्षा को दैनिक जीवन व स्थानीय

संस्कृति से जोड़कर बालक को शिक्षा के प्रति जिज्ञासु बनाता है। ईसीसीई ने प्रारम्भिक शिक्षा के प्रारूप को इस प्रकार डिजाइन किया है कि प्रत्येक बालक का बौद्धिक, तार्किक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके। बालक के मानसिक, तार्किक, वैज्ञानिक, बौद्धिक क्षमताओं के विकास हेतु ईसीसीई बहुस्तरीय व बहुआयामी शिक्षा विविध माध्यमों द्वारा जैसे – कहानियों, नृत्य, संगीत, चित्रकला, शिल्प, अक्षरज्ञान, पहेलियों, गणित का प्रारम्भिक ज्ञान, भाषा, संख्या, रंग, इण्डोर व आउटडोर गेम के माध्यम से बालक की विचारशील शक्तियों का, जिज्ञासु प्रवृत्तियों का, मानसिक क्षमता का उत्तरोत्तर विकास करना है।

''यदि आप अपने बच्चों को बुद्धिमान बनाना चाहते हैं तो उन्हें परियों की कहानियाँ सुनाएँ। यदि आप उन्हें और भी बुद्धिमान बनाना चाहते हैं तो उन्हें और अधिक परियों की कहानियाँ सुनाएँ।''

– अल्बर्ट आइंस्टीन

बच्चों के मानसिक, तार्किक विकास हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि बच्चों को ये सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचें, न कि क्या सोचें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई बच्चों के मानसिक विकास पर विशेष बल देती है जो बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा पाठ्यक्रम को नवीनतम स्वरूप प्रदान करना व चरणबद्ध रूप से ईसीसीई प्रणाली को लागू करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई द्वारा प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों, आंगनवाड़ियों को उच्चस्तरीय स्वरूप प्रदान करना, समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण करना, उच्चगुणवत्ता के उपकरणों से सुसज्जित करना ईसीसीई का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। ईसीसीई प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्रों की संरचना विशेष रूप से एक उच्चस्तरीय स्वरूप में करेगी जिसमें नवीन डिजाइन का स्वच्छ वातावरण से परिपूर्ण भवन व पर्यटन हेतु मैदान, बालक में खोज प्रवृत्ति जाग्रत करने हेतु विशेष रूप से आवश्यक समस्त उपकरण, बालक की तार्किक–मानसिक क्षमता का विकास करने हेतु विशेष स्वरूप प्रदान करेगी।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा बालक–बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करना

ईसीसीई द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण पद्धति बालक–बालिकाओं के सामाजिक, मानसिक, तार्किक, बौद्धिक, नैतिक, चारित्रिक, व्यवहारिक, सांवेगिक, सांस्कृतिक, भौतिक व उच्चस्तरीय मानवीय गुणों का विकास कर उन्हें सुयोग्य, सुसंस्कृत नागरिकों के रूप में परिणामित करेगी तथा बालकों को राष्ट्र के नवनिर्माता के रूप में पोषित करेगी।

''हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े हो तथा बुद्धि का विकास हो।''

– स्वामी विवेकानंद

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा शिक्षा का आदिवासी बहुल क्षेत्र में समृद्धिकरण करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य आदिवासी बहुल क्षेत्रों में आश्रमशालाओं का निर्माण कर, आदिवासी बहुल क्षेत्र में शिक्षा को सुसमृद्ध बनाना है। ईसीसीई सर्वप्रथम आदिवासी बहुल क्षेत्रों में आश्रमशालाओं का निर्माण करेगी तत्पश्चात उसे चरणबद्ध रूप में विकसित करेगी। सर्वप्रथम आंगनबाड़ियों के माध्यम, से, फिर प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित आंगनबाड़ियों के माध्यम से, फिर पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के माध्यम से तत्पश्चात अकेले चल रहे प्री–प्राइमरी स्कूल के माध्यम से। ईसीसीई शिक्षा को एकीकृत कर, शिक्षा को नवीन स्वरूप व सुदृढ़ता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित करेगी।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा द्वारा पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु शिक्षकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई द्वारा पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षकों को नवीन रूप में प्रशिक्षण दिया जोयगा जिससे सुप्रशिक्षित व सुयोग्य शिक्षकों का निर्माण हो सकेगा। 10+2 तथा उससे अधिक योग्यता

रखने वाले शिक्षकों को ईसीसीई द्वारा छः महीने का प्रमाण पत्र कार्यक्रम कराया जायेगा तथा कम योग्यता रखने वाले शिक्षकों को एक वर्ष का डिप्लोमा कार्यक्रम कराया जायगा तथा बालकों के अनुरूप नवीन प्रविधियों से अवगत कराया जायेगा। इन समस्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों को दूरस्थ माध्यमों, स्मार्टफोन व डीटीएच चौनलों के माध्यम से प्रशिक्षुओं तक पहुँचाया जायेगा। इस प्रकार समस्त शिक्षकों को ईसीसीई में योग्यता प्राप्त करने का सुअवसर सरलतापूर्वक प्राप्त हो सकेगा तथा देश का भविष्य नवीन व सुयोग्य शिक्षकों द्वारा पोषित हो सकेगा।

''एक अच्छा शिक्षक आशा की प्रेरणा, कल्पना को साकार कर और अध्ययन के लिए प्रेम जगा सकता है।''

– ब्रैड हेनरी

''एक अच्छा शिक्षक उस मनोरंजन करने वाले की तरह है, जो सबसे पहले उसे सुनने या देखने वाले का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है, इसके बाद वो उन्हें शिक्षित करता है।''

– जॉन हेनरिक क्लार्क

यदि सुयोग्य व सुप्रशिक्षित शिक्षक होंगे तो वह बालकों को भी सुयोग्य बना सकेंगे ऐसा कहा गया है कि:

''बच्चे तरल सीमेंट की तरह होते हैं उन पर जो कुछ गिरता है वह आकर्षित हो जाता है।''

ईसीसीई के प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन व निरीक्षण हेतु विशेष योजना निर्माण तथा समिति का गठन

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का आयोजन व ईसीसीई की योजनाओं का आयोजन एवं क्रियान्वयन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला और बाल विकास (डब्ल्यूसीडी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमएचएफडब्ल्यू), और जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया जायेगा तथा ईसीसीई को दिशानिर्देशित करने हेतु एक टास्क फोर्स (विशेष संयुक्त कार्य बल) का भी गठन किया जायेगा। इन समस्त समितियों तथा विशेष नवनिर्मित संगठन द्वारा ईसीसीई को विशेष रूप से क्रियान्वित किया जायेगा जिससे ईसीसीई अपने समस्त लक्ष्यों को पूर्ण कर, एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा मनोविज्ञान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत प्रारम्भिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इसका विशेष कारण वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक शोध से प्रत्यक्ष प्रमाणित होता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार 6 वर्ष की अवस्था तक बालक के मस्तिष्क का विकास 85 प्रतिशत तक पूर्ण हो जाता है। कुछ महान विचारकों ने अपने मत इसके पक्ष में इस प्रकार व्यक्त किए हैं:

''बालक प्रथम छः वर्ष में बाद के बारह वर्ष से भी दुगुना सीख जाता है।''

– गैसेल

''पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील रहती है।''

– जे0 न्यूमेन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत सर्वाधिक महत्व ईसीसीई द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों व बालवाटिका पर दिया गया। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी प्रमाणित है कि शैशावस्था में बालक का सीखने का स्तर उच्चकोटि का होता है तथा बालक अपने बड़ों के क्रियाकलापों को ज्यों का त्यों दोहराता है। अतः उनके समक्ष आदर्शात्मक व्यवहार व उच्च स्तर के क्रियाकलाप उन्हें आदर्शात्तक व्यक्तिव प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाहित करेगा। इसके पक्ष में कुछ विचारकों ने अपने मत इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं:

''जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास कर लेता है।''

– स्टॉग

''शैश्वावस्था सीखने का आदर्शकाल है।''

– वैलेन्टाइन

''बच्चे सबसे बड़े नकलची होते हैं उन्हें नकल करने के लिए कुछ महान दीजिए।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बालक में तार्किक विकास, चिन्तन शक्ति, कल्पना शक्ति, बौद्धिक क्षमता व समस्या समाधान, स्मृति, धारण व विविध मानसिक क्रियाओं के विकास पर प्राथमिक शिक्षा में विशेष बल देती है। मनोवैज्ञानिक भी यह सिद्ध कर चुके हैं कि शैश्वावस्था व बालयावस्था बालक की मानसिक, तार्किक, चिन्तन व कल्पनाशक्ति हेतु विशेष महत्व रखती है।

''जब बालक 6 अथवा उसके आस–पास की आयु में पहुँचता है, उसकी मानसिक योग्यताएँ लगभग सर्वांगीण विकास के स्तर पर पहुँच जाती है।''

– क्रो एण्ड क्रो

ईसीसीई द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत पाठ्यक्रम, शिक्षक व पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन पर विशेष बल देती है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विशेष रूप से कहानियों, नृत्य, संगीत, गायन–वादन, सांस्कृतिक परम्पराओं व चित्रकला, हस्तशिल्प पर विशेष बल देती है।सर्वश्रेष्ठ व सुसंगठित पाठ्यक्रम ही सुयोग्य व सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला रखता है। कनिंघम ने इस विषय में अपना मत इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

''पाठ्यक्रम कलाकार (अध्यापक) के हाथों में वह यन्त्र (साधन) है, जिससे वह अपनी वस्तु (विद्यार्थी) को अपने कला कक्ष (विद्यालय) में अपने आदर्शों (उद्देश्यों) के अनुसार बनाता है।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई द्वारा बालक के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, भौतिक, व्यवहारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं के विकास पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए ईसीसीई ने प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों को नवीन स्वरूप प्रदान करने की विशेष योजना बनायी। इसके साथ ही बालक के सर्वांगीण विकास हेतु विविध नवीन शोधानुसार प्रारम्भिक शिक्षा को दो चरणों में विभेजित किया तथा शिक्षकों को भी विशेष प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें बालक के ईसीसीई विकास करने हेतु सुयोग्य व सक्षम बनाने की विशेष योजना एवं विविध कार्यक्रमों के निर्माण तथा क्रियान्वयन की योजना राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने बनायी है जिससे बालकों की समाज की, समुदाय की तथा राष्ट्र की उन्नति तथा विकास उचित रूप से हो सके तथा राष्ट्र एक नवीन दिशा की ओर प्रोन्नत हो सके। महात्मा गाँधी भी इसी प्रकार की शिक्षा के समर्थक थे। उनके अनुसार जो शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करे वही वास्तविक शिक्षा है।

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।''

– महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की आवश्यकता, महत्व तथा प्रासंगिकता

- वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा हेतु ईसीसीई अत्यन्त आवश्यक व महत्वपूर्ण है। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित व आदिवासी बहुल क्षेत्र के समस्त बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना तथा 2030 से पूर्व प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिकता प्रदान करना है। ईसीसीई एक नवीन योजना है जिसकी वर्तमान भारत को सर्वाधिक आवश्यकता थी। इसका प्रादुर्भाव भारत की शिक्षा को नवीन स्वरूप प्रदान करेगा।
- ईसीसीई शिक्षा को लचीला, बहुस्तरीय व बहुआयामी बनाने के दिशा में प्रयासरत है, जिससे बालकों में शिष्टाचार, नैतिकता, मानवता, चरित्रवान, व्यवहारिकता, सामाजिकता आदि मूल्यों का विकास होगा जो कि वर्तमान समय की आवश्यकता है। वर्तमान समय में बच्चों के जीवन से मूल्यों का ह्रास का क्षरण करने हेतु शिक्षा को पारम्परिक स्थानीय परम्पराओं व संस्कृति से जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है जिसका ईसीसीई द्वारा विशेष ध्यान रखा गया है।
- ईसीसीई वर्तमान समय की आवश्यकता भी थी। इसने प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों को विशेष स्वरूप प्रदान करने की विशेष योजना बनाई। शिक्षा केन्द्रों को समस्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कर नवीन आधुनिक परिवेश प्रदान करने के लक्ष्य वास्तव में वर्तमान समय की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है।

- ईसीसीई द्वारा शिक्षकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना एक अतिउत्तम कार्य है। वर्तमान समय में शिक्षकों को आधुनिक परिवेश व बालक के अनुकूल प्रशिक्षित होना अति आवश्यक व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः उन्हें दूरस्थ शिक्षा द्वारा, स्मार्ट फोन द्वारा, डी.टी.एच. चौनलों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान कर वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है।
- ईसीसीई द्वारा प्राथमिक शिक्षा को दो चरणों (0–3 तथा 3–8 वर्ष) में विभेदित करना, विशेष शैक्षणिक ढाँचा विकसित करना, माता–पिता को शिक्षा के प्रत्येक कार्यक्रम व विद्यालय के समस्त बिन्दुओं से जोड़कर उन्हें जागरुक करना। ये समस्त योजनाएँ ईसीसीई की अत्यन्त आवश्यक व महत्वपूर्ण हैं।
- ईसीसीई द्वारा शिक्षा को सम्पूर्ण देश में चरणबद्ध रूप में लागू करना व उसे सर्वोच्च आयाम प्रदान कर राष्ट्र की आधारशिला को सुसमृद्ध करना वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ईसीसीई द्वारा ईसीसीई को सम्पूर्ण देश में लागू करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है।
- ईसीसीई की आयोजना तथा क्रियान्वयन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला और बाल विकास (डब्लू. सी.डी.), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एम.एच.एफ.डब्ल्यू.) एवं जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया जायेगा तथा ईसीसीई को दिशानिर्देशित करने हेतु एक टास्क फोर्स का भी गठन किया जायेगा जो कि ईसीसीई को समय–समय पर निर्देशित करेगा, जो अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

उपसंहार

भारत में 34 वर्ष पश्चात एक ऐसी शिक्षा नीति का प्रादुर्भाव हुआ है जिसने शिक्षा की नवीन संकल्पना कर शिक्षा को नवीन स्वरूप प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। 2030 से पूर्व शिक्षा को सार्वभौमिक स्वरूप प्रदान कर व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के उत्थान हेतु महत्वपूर्ण आधारशिला का निर्माण किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत ईसीसीई का निर्माण शिक्षा की गुणवत्ता व शिक्षकों की गुणवत्ता व शिक्षाकेन्द्रों की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि कर शिक्षा को समद्ध व सुदृढ़ कर राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। ईसीसीई न केवल शिक्षा को मजबूती प्रदान करने में भूमिका निर्वाहित करेगा वरन् राष्ट्र के प्रत्येक बालक को शारीरिक, मानसिक रूप से सुसमृद्ध कर उसका चहुँमुखी विकास कर एक सुयोग्य नागरिक के रूप में परिणामित करेगी व राष्ट्र को विकास के नवीन आयाम प्रदान करेगी।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
2. शिक्षा मनोविज्ञान – पी.डी. पाठक
3. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ. लक्ष्मीलाल के. ओड
4. आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान – अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह
5. https://indianexpress.com/article/explained/reading-new-education policy-india-schools-colleges-6531603
6. https://www.dristiias.com/hindi/daily updates/daily news editorials/an education policy-that-is-sweeping-in-its-vision
7. https://www.academics4nation.org
8. https://www.iasbook.com/hindi/education-in-india-essay/
9. https://www.achhikahbar.com/2011/12/13/education-quotes-in-hindi/amp/
10. https://vivekananda.arvindkatoch.com//

****